प्रश्न:- हिन्दी खड़ी बोली गद्य का उद्भव और विकास?

संवत 1900 से लेकर आज तक के समय को आधुनिक काल तक के अन्तर्गत रखते हुए आचार्य शुक्ल एवं उसके बाद के इतिहासकार लेखकों ने इसे गद्य काल नाम दिया है। गद्य काल सभी दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।

(1) वीरगाथा काल से लेकर रीतिकाल तक का साहित्य कविता का साहित्य है और पहली बार हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में गद्य में एक महत्वपूर्ण साहित्यिक विधा के रूप में विकसित हुआ।

(2) आधुनिक काल भाषा की दृष्टि से भी पूरी नवीन बदलाव हुए प्रारम्भ हुआ। अपभ्रंश, भाषा, प्राकृत, डिंगल, पिंगल, अवधी और ब्रजभाषा की साहित्य रचना खड़ी बोली को लेकर अपनी आधुनिकता के विकास पथ पर समृद्ध होने लगा इस दौर से ही होना चाहिए। भाषा देश काल का अनुसरण करती है आवश्यकतानुसार निर्माण की प्रक्रिया में भाषा समृद्ध होती रहती है। भाषा की प्रवृत्ति विकासोन्मुखी होती है इसी आलोक में खड़ी बोली के विकास का मूल्यांकन अपेक्षित होता है।

यही सच है कि आज जिस बोली जिस रूप में है उसकी विकास यात्रा लम्बी है। कविता के युग में विभिन्न रचनाओं में कवियों के द्वारा यत्र तत्र खड़ी बोली के शब्द प्रयुक्त होते रहते हैं। चाहे आदिकाल के अमीर खुसरो हो या मैथिल कवि विद्यापति भक्ति काल के संत कवियों की रचनाओं में भी खड़ी बोली भाषा के शब्द प्रयोग होता रहा है से लेकर कई ~~...~~ मंजिलों को पार करती हुई खड़ी बोली की धारा अखंडित प्रवाहित होती रही है। खड़ी बोली गद्य के विकास क्रम को कई खंड में देखा जा सकता है —

... भाषा का नाम ⟹ 14वीं शताब्दी में गोरख पंथी

ग्रन्थों में हठयोग या ब्रह्म ज्ञान सम्बन्धी सिद्धांतों के प्रतिपादन के लिए ब्रजभाषा गद्य का प्रयोग मिलता है। भक्ति काल में कृष्ण भक्ति शाखा के अन्तर्गत विट्ठल नाथ जी ने "शृंगार रस मंडन" गद्य ब्रजभाषा में लिखा। इसी तरह 84 वैष्णवों की वार्ता और दो सौ बावन वैष्णव की वार्ता ब्रजभाषा गद्य की रचनाएँ हैं। रीतिकाल में नाभादास जी की गद्य की लिखी गयी पुस्तक 'अष्टछाप' मिलती है। सुरति मिश्र की बैताल पच्चीसी जो संस्कृत कथा को लेकर ब्रजभाषा के गद्य में लिखी गई।

सारांश यह है कि खड़ी बोली गद्य के पहले ब्रजभाषा गद्य का अत्यंत ही विकसित रूप मिलता है। लेकिन इसे खड़ी बोली गद्य का प्रारम्भिक रूप मान लेना अनुचित न होगा।

अमीर खुसरो ने विक्रम की 14वीं शताब्दी में कुछ खड़ी बोली के शब्दों का प्रयोग किया। भक्ति काल के प्रारम्भ में निर्गुण धारा के प्रसिद्ध कवि कबीरदास ने सधुक्कड़ी भाषा के द्वारा खड़ी बोली का व्यापक प्रयोग किया।

(१) गंग कवि ने पहली बार "चंद छंद बरनन की महिमा" नामक ~~पुस्तक~~ गद्य पुस्तक खड़ी बोली में लिखी। इसके बाद बहुत साफ सुथरी खड़ी बोली भाषा में राम प्रसाद निरंजनी की पुस्तक "भाषा योगवशिष्ठ" की रचना हुई। इसमें खड़ी बोली गद्य का परिष्कृत रूप दिखाई पड़ता है।

२. संवत 1960 में ~~जान~~ जॉन गिलक्राइस्ट ने फोर्ट विलियम कॉलेज कलकत्ता की स्थापना की। उनका उद्देश्य देशी भाषा की पुस्तकें तैयार करना था। संस्कृत और उर्दू के अनुवाद भी हिन्दी में किये गये।

लल्लू लाल जी, सदल मिश्र, मुंशी सदा सुखलाल और इंशा अल्ला खां ने इस कॉलेज के अन्तर्गत काम किया और खड़ी बोली के विकास में अपना योगदान दिया। लल्लू लाल जी ने प्रेमसागर की रचना की। सदल मिश्र ने "नासिकेतोपाख्यान" लिखा। सदासुख लाल ने सुखसागर की रचना की। इंशा अल्ला खां ने रानी केतकी की कहानी लिखी। सदासुखलाल के गद्य में बोल-चाल की शिष्ट भाषा का प्रयोग मिलता है कहीं कहीं शुद्ध संस्कृत के शुद्ध शब्द भी मिलते हैं।

इंशा अल्ला खां ने ठेठ हिन्दी लिखने का प्रयास किया, उक्त चारों लेखकों में इंशा की परिभाषा सबसे चटपटी और मुहावरेदार है। लल्लू लाल की भाषा में मिली जुली खड़ी बोली का प्रयोग है। सदल मिश्र ने व्यवहारोपयोगी भाषा लिखने का प्रयास किया। इनकी भाषा साफ सुथरी न

हो ~~गई~~ लगी। इस तरह खड़ी बोली गद्य के परिवर्तन करने वालों में इन चारों का नाम उल्लेखनीय हो जाता।

3. खड़ी बोली के विकास में ईसाइयों की हिन्दी सेवा भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। ईसाई धर्म प्रचारकों ने अपने मत के प्रचार के लिए धर्म सम्बंधी अनेक छोटी पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद किया। अनुवाद कार्य के लिए हिन्दी पुस्तकों के लिए श्री राम प्रेस की स्थापना हुई।

आगरे में पादरियों की स्कूल बुक सोसाइटी भी खुली, मिर्जापुर में आर्फन प्रेस खुला। अभिप्राय यह हुआ कि हिन्दी गद्य के प्रचार में ईसाइयों का बहुत बड़ा योग रहा है।

4. ब्रह्म समाज के प्रवर्तक राजा राम मोहन राय हुए। ब्रह्म समाज के द्वारा भी खड़ी बोली गद्य का प्रचार हुआ। उस समय तक भी हिन्दी के बहुत छापखाने खुल गए। और संवत 1883 में ही हिन्दी का सबसे पहला समाचार पत्र उदन्त मार्तण्ड का प्रकाशन हुआ।

5. 1913 में राजा शिव प्रसाद शिक्षा विभाग में इंस्पेक्टर के पद पर नियुक्त हुए। उन्होंने हिन्दी का आश्रय लिया, नियमों कुछ कहानी के ढंग आ गये पाठ्य क्रम के लिए राजा साहिब ने "राजा भोज का सपना" आदि पुस्तकों की रचना की। सरल हिन्दी का नमूना लेकर राजा लक्ष्मण सिंह आये उन्होंने प्रजा हितैषी नामक पत्र निकाला। राजा लक्ष्मण सिंह के समय में ही खड़ी बोली भाषा सुव्यवस्थित परिमार्जित होने लगी।